श्री नवकार सूत्र

नमो अरिहंताणं.

नमो सिद्धाणं.

नमो आयरियाणं.

नमो उव्वजायाणं.

नमो लोएसव्वसाहूणं.

एसो पंचनमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो;

मंगलाणं च सव्वेसिं, पठमं हवइ मंगलं.

गाथार्थ - नवकार

अरिहंत भगवंतों को नमस्कार हो, सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो, आचार्य भगवंतों को नमस्कार हो, उपाध्याय भगवंतो को नमस्कार हो, लोक में रहे हुए सर्व साधु भगवंतो को नमस्कार हो, इन पांचो को किया हुआ नमस्कार सृव पापों का नाश करनेवाला है और सर्व मंगलो में (यह नमस्कार) प्रथम मंगल है...

पंचिंदिय सूत्र

पंचिंदिय-संवरणो, तह नव-विह-बंभचेर-गुत्तिधरो,

चउविह-कसाय-मुक्को, इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुुत्तो.....१

पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-विहायार-पालण-समत्थो,

पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीस-गुणो गुरु मज्झ...२

गाथार्थ -

पांच इंर्द्रियो को वश में रखने वाले, नव प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्तियों को धारण करनेवाले, चार प्रकार के कषायो से मुक्त-इन अट्ठारह गुणों से युक्त, तथा....१

पांच महाव्रतो सें युक्त, पांच प्रकार के आचारों का पालन करने में समर्थ, पांच समितियों से युक्त और तीन गुप्तियों से युक्त (इन) छत्तीस गुणोंवाले मेरे गुरु है....२

खमासमण सूत्र

इच्छामि खमा-समणो! वंदिउं, जावणिज्जाए

निसीहिआंए, मत्थएण वंदामि १

गाथार्थ - खमासमण सूत्र

हे क्षमावान साधु महाराज! आपको मैं शक्ति के अनुसार पापमय प्रवृत्तियोेंं को त्याग कर वंदन करना चाहता हूं. मैं मस्तक (आदि पांच अंगो) से वंदन करता हुं.....१

इच्छकार सूत्र

इच्छकार सुह-राइ? सुह-देवसि? सुख-तप? शरीर निराबाध? सुख संजम यात्रा निर्वहो जी? स्वामि! शाता छो जी? आहार - पानी का लाभ देशो जी...१

गाथार्थ - इच्छकार सूत्र

(हे गुरुजी) मैं (पूछना) चाहता हूं. रात्रि में आप सुख पूर्वक रहे हो? (दिन में आप सुख पूर्वक रहे हो?) आपको तप सुख पूर्वक होता है? आपका शरीर पीडा रहित है? आप अपनी संयम यात्रा का सुख पूर्वक निर्वाह करते हो जी? हे स्वामी, आप सुख-शांति में हो? आहार, पानी आदि को ग्रहण कर लाभ देनाजी...१

अब्भूट्ठिओमि सूत्र

इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ा अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर-देवसिमं खामेउं?इच्छं खामेमि देवसिंअं. जं किंचि अपत्तिअं, पर-पत्तिअं; भत्ते, पाणे;

विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे; अंतर-भासाए उवरि-भासाए; जं किंचि मज्झ, विणय-परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा; तुब्भे जाणह, अहं न

जाणामि,तस्स मिच्छामि दुक्कडं....१

गाथार्थ - अभ्भुट्ठिओ सूत्र

हे भगवान! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो ा दिन में किये हुए (अपराधों की) क्षमा मांगने के लिये मैं उपस्थित हुआ हूं ा आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं ा दिन में हुए (अपराधों की) मैं क्षमा मांगता हूं, आहार -पानी में, विनय में, वैयावुत्य में, बोलने में, बातचीत करने में, उंचे आसन पर बैठने में, समान आसन पर बैठने पर से, बीच में बोलने से, टीका करने से जो कोइ अप्रीतिकारक, विशेष अप्रितकारक हुआ हो, छोटा या बठा विजय रहित (वर्तन) मुझसु हुआ हो, (जो) आप जानते हो, मैं नहीं जानता हूं. मेरे वे अपराध मिथ्या हो.... १

सूत्र परिचय

इस सूत्र में गुरु महाराज के प्रति हुए अविनय के लिए क्षमा मांगी जाती हैा

इरियावहिया सूत्र

इच्छा कारेण संदिसह भगवन! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं पडिक्कमिउं...१

इरियावहियाए, विराणाए.....२गमणागमणे.....३पाण-क्कमणे, बीय क्कमणे,

हरिय-क्कमणे, औसा उत्तिंगपणग-दग-मट्टि, मक्कडा-संताणा, संकमणे...४

जे मे जीवा विराहिया...५

एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया...६

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया,

ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं.....७

गाथार्थ - इरियावहिया सूत्र

हे भगवन् ०ा स्वेच्छा से आज्ञा दीजिये ०ा आने - जाने की क्रिया से लगे पाप का प्रतिक्रमण करुं? आपकी आज्ञा मैं स्वीकार करता हूँ ०ा में प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ १

मार्ग में चलते चलते समय हुई जीव विराधना का.....२

आते - जाते समय.....३

प्राणियों को दबाने से, बीज को दबाने से, हरी वनस्पति को दबाने से, ओस की बूंद, चींटीयों के बिल, पंच वर्णी काई, भीगी मिट्टी, मकडी के जाले दबाने से....४

मेरे द्वारा जो जीव मुझसे दुःखित हुए हों.....५

एक इंद्रिय वाले, दो इंद्रियवाले, तीन इंद्रियवाले, चार इद्रियवाले, पाँच इद्रियवाले (जीव)....६

पाँव से मारे हों, धूल से ठके हों, भूमि के साथ कुचले गये हों, परस्पर शरीर से टकराये गये हों, थोडा स्पर्श कराया गया हो, कष्ट पहुंचाया गया हो, खेद पहुंचाया गया हो, डराये गये हों, एक स्थान से दूसरे स्थान पर फिराये गफे हों, प्राण रहित किये गये हों, मेरे ये सब दुुष्कृत्य मिथ्या हों.....७

सूत्र परिचय

इस सूत्र से चलते - फिरते, आते-जाते अपने द्वारा जीव-हसा आदि होने के कारण लगे हुए पापों को नष्ट करने के लिये पूर्व क्रिया रुप मिच्छा मि दुक्कडं

तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही - करणेणं,

विस्सली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घा यणट्ठाए, ठामि काउस्सगं...१

गाथार्थ - तस्स उत्तरी सूत्र

उन (पापों) को फिर से शुद्धि करने के द्वारा, प्रायश्चित करने के द्वारा विशुद्धि करने के द्वारा, शल्य रहित करने के द्वारा, पाप कर्मो का संपूर्ण नाश करने के लिये मैं कायोत्सर्ग करना चाहता हँू ा

शब्दार्थ

कायोत्सर्ग ः संकल्प विकल्प रहित होकर मन को धर्म ध्यान में स्थिर रखने के भिये आवश्यक मानसिक प्रवृत्ति के सिवाय सर्व प्रकार की प्रवृत्ति और शारीरिक ममत्व को मन-वचन-काया से त्याग करना ा

सूत्र परिचय

ईरियावहिया सूत्र से पापों की सामान्य शुद्धि रुप प्रतिक्रमण करने के बाद भी बचे हुए पापों को नाश करने के लिए (विशेष शुद्धि के लिए) उत्तर क्रिया रुप काउस्सग्ग के पांच हेतु इस सूत्र में बताये है ा

अन्नत्थ सूत्र

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,

जंभाइए, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए पित्त-मुच्छाए.....१

सुहुमेहिं, अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं.....२

एवमाइएहिं, आगारेहिं, अ-भग्गो अ-विराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो.....३

जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि...४

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरार्मि...५

गाथार्थ - अन्नत्थ सूत्र

जब तक अरिहंत भगवंतो को नमस्कार करने के द्वारा (कायोत्सर्ग) पूर्ण न करुं (गा. ४) तब तक (गा. ५.) श्वास लेने से, श्वास छोडने से, खांसी आने से, छींक आने से, जम्हाई आने से, डकार आने से, अधो वायु निकलने से, चक्कर आने से, पित्त विकार के कारण मूर्च्छा आने से...१

सूक्ष्म रुप से अंग संचालन से, सूक्ष्म रुप से कफ और वायु के संचालन से, सूक्ष्म रुप से दृृष्टि के संचालन....२

इत्यादि आगारों से मेरा कायोत्सर्ग अभंग और अविराधित हो..३.. (इंर्सलिये) अपनी काया को स्थिरता पूर्वक, मौन पूर्वक (और) ध्यान पूर्वक त्याग करता हूँ ...४.

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअ-गरे, धम्म-तित्थ-यरे जिणे,

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली....१

उसभ-मजिअं च वंदे, संभव -मभि णंदणं च सुमइंर् च.

पउम-प्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे..२

सुविहिं च पुप्फ दंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च.

विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि...३

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि-सुव्वयं नमि-जिणं च,

वंदामि रिट्ठ नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च....४

एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा.

चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ...५

कित्तिय-वंदिय - महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा.

आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहि-वर-मुत्तमं-दिंतु...६

चंदेसु निम्मल-यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा

सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु...७

गाथार्थ - लोगस्स सूत्र

लोक में प्रकाश करने वाले, धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले, राग-द्वेषादि के विजेता एवं त्रैलोक्य पूज्य चोबीसों केवलियों की में स्तुति करुंगा....१

श्री ऋषभदेव, श्री अजितनाथ, श्री संभवनाथ, श्री अभिनंदन स्वामी और श्री सुमतिनाथ को में वंदन करता हूँ. श्री पद्मप्रभ स्वामी, श्री सुपार्श्वनाथ और श्री पुष्पदंत, श्री शीतलनाथ, श्री श्रेयांसनाथ, श्री वासुपूज्य स्वामी, श्री विमलनाथ, श्री अनंतनाथ, श्री धर्मनाथ और श्री शांतिनाथ जिनेश्वर को में वंदन करता हूँ....३

श्री कुंथुनाथ, श्री अरनाथ, श्री मल्लिनाथ स्वामी और श्री नमिनाथ जिनेश्वर को में वंदन करता हूँ. श्री अरिष्ट नेमि, श्री पार्श्वनाथ और श्री वर्धमान स्वामी को में वंदन करता हूँ.....४

इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये गये, कर्म रुपी मल से रहित , वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त, तीर्थ के प्रवर्तक चौबीसों जिनेश्वर मेरे उपर प्रसन्न हो.....५

जो ये कीर्तन-वंदन -पूजन किये गए है, भोकोत्तम है, सिद्ध है, वे आरोग्य के लिये बोधि लाभ और उत्तम भाव समाधि प्रदान करे.....६

चंद्रों सें अधिक निर्मल, सूर्यो से अधिक प्रकाशवान, श्रेष्ठ सागर से अधिक गंभीर सिद्ध भगवंत प्रदान करे....७

सूत्र परिचय

इस सूत्र में नाम पूर्वक चौबीस तीर्थंकरो की तथा गर्भित रुप में तीनों काल के सर्व तीर्थंकरों की स्तुति की गयी है एवं सम्यग्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र रुप रत्न-त्रयी द्वारा मोक्ष प्राप्ति की पार्थना की गयी है.

करेमि भंते

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चकखामि,

जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, ति-विहेणं,मणेणं, वायाए, काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि....१

गाथार्थ - करेमि भंते

हे भगवन्! मैं सामायिक करता हूँ जब तक मैं नियम का पालन करता हूँ (तब तक) सावध योग का दो प्रकार से- न कराऊँ न कराऊँ और तीन प्रकार से - मन, वचन और काया से पच्चक्खाण करता हूँ, हे भगवन् ! उनका मैं प्रतिक्रमण करता हूँ, निंदा करताहूँ. निंदा करता हूँ, मैं गर्हा करता हूँ और मैं (पापवाली) आत्मा का त्याग करता हूँ.....१

सूत्र परिचय

इस सूत्र में सामायिक ग्रहण करने का और सावध योग रुप पाप का त्याग करने का पच्चक्खाण है, अर्थात् मन-वचन-काया से कोई भी पाप न करने, न कराने एवं सामायिक के नियम तक समभाव में रहने का बतलाया है.

सामाइय-वय-जुत्तो सूत्र

सामाइय-वय-जुत्तो, जाव होइ नियम-संजुत्तो, छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइयं जत्तिआ वारा...१

सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा, एएण कारणेणं, बहुओ सामाइयं कुज्जा...२

सामायिक विधि से लिया, विधिए पूर्ण किया, विधिमें जो कोई अविधि हुई हो, उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं...३

दस मन के, दस वचन के, बारह काया के- इन बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो, उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं....४

गाथार्थ - सामाइय-वय-जुत्तो सूत्र

जहाँ तक (सामायिक व्रत धारीका) मन सामायिक व्रत के नियम सें युक्त है

और जितनी बार सामायिक करता है, (वहां तक और उतनी बार वह) अशुभ कर्मों का नाश करता है....१

सामायिक करने पर तो श्रावक श्रमण के समान होता है, इस लिये सामायिक अनेक बार करना चाहिये....२

सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, परन्तु विधि करते समय जो कोई अविधि हूई हो, मन-वचन-काया से मेरे वे सब दुष्कृत्य मिथ्या हो...३

मन के दस, वचन के दस, और काया के बारह-इन बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो, मेरे वे दुष्कृत्य मन-वचन-काया से मिथ्या हो.....४

सूत्र परिचय

इस सूत्र में सामायिक व्रत की महिमा बताई गई है. सामायिक करने वाला श्रावक जब तक सामायिक में रहता है, तब तक वह मुनि तुल्य कहा जाता है. इसलिए पवित्र चारित्र धर्म की आराधना के लिए एवं पुनः पुनः सामायिक करने की भावना को स्थायी बनाने के लिए सामायिक पूर्ण करते समय यह सूत्र बोला जाता है.

जग-चिन्तामणि चैत्य-वन्दन

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् ! चैत्य-वन्दन करुं? इच्छं.

जग-चिन्तामणि! जग-नाह! जग-गुरु! जग-रक्खण!

जग-बंधव! जग-सत्थवाह! जग-भाव-विखक्खण!

अट्ठावय-संठविअ-रुव! कम्मट्ठ-विणासण!

चउवीसं पि जिणवर! जयंतु अ-प्पडिहय-सासण...१

कम्म-भूमिहिं कम्म-भूमिहिं पठम-संघयणि,

उक्कोसय सत्तरि-सय जिण-वराण विहरंत लब्भइ;

नव-कोडिहिं केवलीण, कोडी-सहस्स नव साहु गम्मइ.

संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण...२

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि,

उज्जिंति पहु-नेमि-जिण, जयउ वीर सच्चउरी-मंडण;

भरु-अच्छहिं मुणि-सुव्वय, महुरि-पास दुह-दुरिअ-खंडण,

अवर-विदिहि तित्थ-यरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि;

तीआणागय संपइय, वंदउं जिण सव्वे वि....३

सत्ता-णवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ-कोडिओ.

बत्तीस-सय बासियाइं, तिअ-लोए चेइए वंदे....४

पनरस-कोडि - सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना.

छत्तीस-सहस-असीइं, सासय-बिंबाइं पणमामि...५

गाथार्थ - जग-चिन्तामणि चैत्य-वन्दन

हे भगवन् ! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो. (मैं) चैत्यवंदन करुँ? (मैं) आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ.

जगत के लिये चिंतामणि रत्न समान !, जगत के स्वामी! जगत् के गुरु ! जगत् के जीवों का रक्षण करने वाले ! जगत् के सार्थवाह ! जगत् के सर्व भावों को जानने और प्रकाशित करने में निपुण!, अष्टापद पर्वत पर स्थापित की गई है जिनकी प्रतिमाएँ ऐसे ! आठो कर्मो को नाश करने वाले !, अखंडित शासन वाले ! है चैबीसों जिनेश्वरो ! आपकी जय हो...१

कर्म भूमियों में प्रथम संघयण वाले उत्कृष्ट से एक सौ सत्तर जिनेश्वर नव क्रोड केवली और नव हजार क्रोड (९० अरब) साधु वितरण करते हुए पाए जाते है, वर्तमान काल के बीस जिनेश्वर मुनि, दो क्रोड केवलज्ञानी और दो हजार क्रोड

(२०अरब) साधुओं का प्रातःकाल में नित्य स्तवन किया जाता है...२

हे स्वामी ! आपकी जय हो! हे स्वामी! आपकी जय हो! शत्रुंजय तीर्थ पर विराजित हे श्री ऋषभदेव ! गिरनार पर्वत पर विराजमान हे श्री नेमिनाथ प्रभु ! साँचोर के शृंगार रुप हे श्री महावीर स्वामी !, भरुच में विराजित है श्री मुनिसुव्रत स्वामी! दुःख और पाप का नाश करन वाले मथुरा में विराजित है श्री पार्श्वनाथ ! आपकी जय हो! महाविदेह क्षेत्र के तथा चारों दिशाओं और विदिशाओं में जो कोई भी अन्य तीर्थंकर मे हुए हों, भविष्य काल में होने वाले हों और वर्तमान काल में हुए हों (उन) सर्व जिनेश्वरों को मैं वंदन करता हूं...३

तीनों लोको में स्थित आठ क्रोड सत्तावन लाख दो सौ बयासी (८,५७,००,२८२) जिन चैत्यों को मैं वंदन करता हूँ...४

तीनों लोक में स्थित पंद्रह अरब बयालीस क्रोड अट्ठावन लाख छत्तीस हजार अस्सी (१६,४२,५८,३६,०८०) शाश्वत जिन प्रतिमाआं को मैं वंदन करता हूँ.....५

सूत्र परिचय

चैतय-वंदन के रुप मैं रचित इस सूत्र से सर्व तीर्थंकर भगवंतो, प्रसिद्ध तीर्थ, सर्व चैत्यों (मंदिरो) और जिन प्रितमाओं की स्तुति तथा श्रमण भगवंतो आदि को वंदन किया गया है.

जं किंचि सूत्र

जं किंचि नाम-तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे भोए.

जाइं जिण-बिबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि...१

गाथार्थ - जं किंचि सूत्र

स्वर्ग, पाताल और मनुष्य लोक में जो कोई भी नामरुपी तीर्थ हो, जो भी जिन प्रतिमाएँ होे, उन सब को में वंदन करता हूँ...१

सूत्र परिचय

इस सूत्र में तीनों लोक में स्थित सर्व जैन तीर्थो और सर्व जिन प्रतीमाओं को नमस्कार किया गया है.

नमुत्थुणं सूत्र

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं...१

आई-गराणं, तित्थ-यराणं, सयं-संबुद्धाणं...२

पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं,

पुरिस-वर गंध-हत्थीणं....३

लोगुुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं,

लोग-पईमाणं,लोग-पज्जोअ-गराणं.....४

अभय-दयाणं, चक्खुदयाणं, मग्ग-दयाणं,

सरण-दयाणं, बोहि दयाणं....५

धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायागणं,

धम्म सारहीणं, धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं...६

अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं, वियट्ग-छउमाणं...७

जिणाणं, जावायाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं.....८

सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-

मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति

सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं, संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ भयाणं....९

जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले.

संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे ति-विहेण वंदामि...१०

गाथार्थ - नमुत्थुणं सूत्र

अरिहंत भगवंतोंंे नमस्कार हो...१

श्रुत की आदि करने वाले, तीर्थकर, स्वयं बोध प्राप्ति किये हुए...२

...पुरुषों में उत्तम, पुरुषों में सिंह समान, पुरुषों में पुंडरीक कमल समान श्रेष्ठ, पुरुषों में गंध हस्ती के समान श्रेष्ठ....३

... लोक में उत्तम, लोक के नाथ, लोक का हित करने वाले, लोक में दीपक समान, लोक में प्रकाश करने वाले...४

...अभय प्रदान करने वाले, नेत्र प्रदान करने वाले, मार्ग दिखाने वाले, शरण देने वाले, बोधि-बीज देने वाले...५

...धर्म प्रदान करने वाले, धर्मोपदेश देने वाले, धर्म के स्वामी, धर्म के सारथी, चतुर्गति नाशक श्रैष्ठ धर्म रुपी चक्र को धारण करने वाले.....६

...नष्ट न होने वाले श्रेष्ठ ज्ञान और दर्शन को धारण करने वाले, छद्मस्थता से रहित...७

...जीतने वाले और जिताने वाले, तरे हुए और तारने वाले, बोध पाये हुए और बोध प्राप्त करने वाले, मुक्त (मुक्ति पाये हुए) और मुक्ति प्राप्त कराने वाले...८

...सर्वज्ञ और सर्वदर्शी, शिव, अचल, अरुज, अनंत, अक्षय, अव्याबाध, अपुनरावृत्ति, सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त किये हुए और भय को जीतने वाले (जिनेश्वरों को नमस्कार हो)....९

और जो भूत काल में सिद्ध हुए है, भविष्य काल में (सिद्ध) होंगे और वर्तमान काल में विधमान हैं (उन) सर्व (अरिहंतों) को मैं तीनों प्रकार से वंदन करता हूँ...१०

सूत्र परिचय

इस सूत्र द्वारा शक्रेन्द्र अरिहंत भगवान की उनके सर्वश्रेष्ठ गुणों के

वर्णन से स्तुति करते है.

जावंति-चेइआइं सूत्र

जावंति चेइआइंं, उड्ठे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ.

सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं...१

गाथार्थ - जावंति - चेइआइं सूत्र

उर्ध्व लोक, अधो लोक और तिर्यक् लोक में जितने जिन चैत्य हैं, यहाँ रहा हुआ मैं, वहाँ रहे हुए उन सब (चैत्यो) को वंदन करता हूँ...१

सूत्र परिचय

इंर्स सूत्र से तीनों लोक में स्थित सर्व जिन चैत्यों को नमस्कार किया जाता है.

जावंत के वि सूत्र

जावंत के वि साहू, भरहेरवय-महा-विदेहे अ.

सव्वेसिं तेसिं पणओ, ति-विहेण ति-दंड-विरयाणं...१

गाथार्थ - जावंत के वि सूत्र

भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्रमें जितने भी साधु तीन प्रकार से, तीन दंड से निवृत्त हैं, उन सबको मैं प्रणाम करता हूँ...१

सूत्र परिचय

इस सूत्र से सभी भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में स्थित सर्वे श्रमणों (साधुओं) को नमस्कार किया जाता है.

नमोर्हत् सूत्र

नमोर्हत्-सिद्धा-चार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यः...१

गाथार्थ - नमोर्हत् सूत्र

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधुओं को नमस्कार हो....१

सूत्र परिचय

श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि द्वारा दृष्टिवाद नामक पूर्व में से उद्धृत इस सूत्र से श्री पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है...१

उवसग्गहरं स्तोत्र

उवस्सग हरं पासं, पासं, वंदामि कम्म-घण-मुक्कं,

विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं....१

विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ,

तस्स गह रोगमारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसासं...२

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणाओ वि बहु-फलो होइ.

जर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं...३

तुह सम्मते लद्धे, चिंतामणी-कप्प-पायव-ब्भहिए.

पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं...४

इय संथुओ महायस! भत्ति-ब्भर-निब्भरेण हिअएण.

ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिण-चंद...५

गाथार्थ - उवसग्ग-हरं स्तोत्र

उपद्रवो को दूर करने वाले पार्श्व यक्ष सहित, कर्म समूह से मुक्त, सर्प के विष को नाश करने वाले, मंगल और कल्याण के गृह रुप श्री पार्श्वनाथ भगवान को मैं वंदन करता हूँ...१

जो मनुष्य विसहर फुलिंग मंत्र को नित्य स्मरण करता है, उसके ग्रह दोष,

महारोग, महामारी और विषय ज्वर शांत हो जाते है.....२

मंत्रो तो दूर रहे, आपको किया हुआ प्रणाम भी बहुत फल देने वाला है, मनुष्य और तीर्यंच गति में भी जीव दुःख और दरिद्रता को प्राप्त नहीं करते है....३

चिंतामणि रत्न और कल्प वृक्ष से भी अधिक शक्तिशाली आपके सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर जीव सरलता से अजरामर (मुक्ति) पद को प्राप्त करते है...४

हे महायशस्विन् ! मैंने इस प्रकार भक्ति से भरपूर हृदय से आपकी स्तुति की है. इसलिये हे देव ! जिनेश्वरों में चंद्र समान हे श्री पार्श्वनाथ! भवो भव बोधि को प्रदान कीजिए..५

सूत्र परिचय

श्री भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित इस सूत्र में सर्व विघ्नों को दूर करने वाले श्री पार्श्वनाथ प्रभु के गुणों की स्तुति की गयी है.

जय वीयराय! सूत्र

जय वीयराय! जग-गुरु! होउ ममं तुह प्पभावओ भयवं!

भव-निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल - सिद्धि...१

लोग-विरुद्ध-च्चाओ गुरु-जण - पूआ परत्थ-करणं च.

सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवाणाआ-भवमखंडा...२

वारिज्जइ जइ वि नियाण -बंधणं वीयराय! तुह समये

तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं...३

दुक्ख-क्खओ कम्म-क्खओ, समाहि-मरणं च बोहि-लाभो अ;

संपज्जउ मह एअं, तुह नाह! पणाम-करणेणं...४

सर्व मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम्

प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ...५

गाथार्थ - जय वीयराय ! सूत्र

हे वीतराग प्रभु ! हे जगद् गुरु ! आपकी जय हो ! हे भगवन् ! आपके प्रभाव से संसार के प्रति वैराग्य, (मोक्ष) मार्ग के अनुसार प्रवृत्ति, इष्ट फल की सिद्धि (मुझे प्राप्त हो)...१

...लोक विरुद्ध प्रवृत्ति त्याग, गुरुजनों के प्रति सन्मान, परोपकार प्रवृत्ति, सद्गुरुओं का योग और उनकी आज्ञा के पालन की प्रवृत्ति पूरी भव परंपरा में अखंडित रुप से मुझे प्राप्त हो...२

हे वीतराग! आपके शास्त्र में यद्यपि निन्दान बंधन निषेध किया गया है, तथापि भवो भव मुझे चरण सेवा प्राप्त हो...३

हे नाथ ! आपको प्रणाम करने से दुःख का नाश, कर्म का नाश, समाधि मरण और बोधि लाभ मुजे प्राप्त हो...४

सर्व मंगलों में मंगल, सर्व कल्याणो का कारण, सर्व धर्मों में श्रेष्ठ जैन शासन जयवंत है...५

सूत्र परिचय

इस सूत्र द्वारा प्रभु से आत्म कल्याण के लिये निर्दोष एवं उत्तम प्रार्थनायें की गयी है.

अरिहंत - चेइयाणं सूत्र

अरिहंत-चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं...१

वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए,

सम्माण-वत्तिआए, बोहि-लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए...२

सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ठमाणीए,

ठामि काउस्सग्गं ...३अन्नत्थ... (सूत्र-७)...४

गाथार्थ - अरिहंत - चेइयाणं सूत्र

अरिहंत भगवान की प्रतिमाओं की आराधना के लिये मैं कायोत्सर्ग करना चाहता हूँ.....१

वंदन करने के निमित्त से, पूजन करने के निमित्त से, सत्कार करने के निमित्त से, सन्मान करने के निमित्त से, बोधि लाभ के निमित्त से, मोक्ष प्राप्त करने निमित्त से...२

श्रद्धा से, बुद्धि से, धृति से, धारणा से और बठती हुई अनुप्रेक्षा से मैं कायोत्सर्ग करता हूँ...३

सूत्र परिचय

इस सूत्र में जिन प्रतिमाओं की आराधना के लिये काउस्सग्ग के समय की भावनाओं का वर्णन है.

कल्लाण-कंदं स्तुति

कल्लाणं-कंदं पठमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमि-जिणं मुणिंदं.

पासं पयासं सुगुणिक्क-ठाणं, भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं...१

अपार-संसार-समुद्द-पारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्क-सारं

सव्वे जिणिंदा सुर-विंद-वंदा, कल्लाण-वल्लीण विसाल-कंदा...२

निव्वाण मग्गे वर-जाण-कप्पं, पणासिया-सेस-कुवाइ-दप्पं.

मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजग-प्पहाणं. ३

कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना, सरोज-हत्था-कमले निसन्ना.

वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था...४

गाथार्थ कल्लाण-कंदं स्तुति

कल्याण के मूल समान प्रथम जिनेश्वर (श्री ऋषभदेव), श्री शांतिनाथ, मुनियों के स्वामी श्री नमिनाथ जिनेश्वर, प्रकाश स्वरूप और सद्‌गुणों के स्थानरुप श्री पार्श्वनाथ एवं श्री महावीर स्वामी को मैं भक्ति पूर्वक वंदन करता हूं....१

पार विना के संसार समुद्र के किनारे को प्राप्त किये हुए, देव समूह से वंदित और कल्याण रुपी लता के विशाल कंद समान सर्व जिनेश्वर शास्त्र का साररुप शिव-सुख (हमें) प्रदान करे...२

निर्वाण मार्ग में श्रेष्ठ वाहन समान, कुवादियांे के अभिमान को पूर्णतया नष्ट करने वाले, विद्धवानों के शरण रुप और तीनों लोक कें श्रेष्ठ जिनेश्वर द्वारा प्ररुपित मत को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ....३

मचकुंद पुष्प, चंद्रमा, गाय के दुध और हिम जैसे श्वेत वर्णवाली, (एक) हाथमें कमल को धारण करनेवाली और करम पर बैठी हुई तथा (दूसरे) हाथ में पुस्तकों के समूह को धारण करने वाली वह प्रशस्ता सरस्वती देवी हमें सदा सुख देने वाली हो....४

सूत्र परिचय

इस स्तुति की पहली गाथा में श्री ऋषभदेव, श्री शांतिनाथ, श्री नेमिनाथ, श्री पार्श्वनाथ और श्री महावीर स्वामीकी दूसरी गाथामें सर्व जिनेश्वरों की, तीसरी गाथामें जिन आगम की और चौथी गाथा में श्रुत देवता की स्तुति है.

संसार-दावा-नल स्तुति

संसार-दावा-नल-दाह-नीरं, संमोह-धूली-हरणे समीरं

माया-रसा-दारण-सार-सीरं, नमामि वीरं गिरि-सार-धीरं...१

भावा-वनाम-सुर-दानव-मानवेन, चूला-विलोल-कमला-वलि-मालितानि,

सूपरिता-भिनत-लोक-समीहितानि, कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि...२

बोधागाधं सुपद-पदवी-नीर-पूराभिरामं, जीवा-हिंसा-विराल-लहरी-संगमा-गाह-

देहं.

चूला-वेलं गुरु-गम-मणी-संकुलं दूर-पारं, सारं-वीरा-गम-जल-निधिं सादरं साधु सेवे..३

आमूला-लोल-धूली-बहुल-परि-मला-लीठ-लोलालि-माला- झंकारा-राव-सारा-मल-दल-कमला-गार-भूमी-निवासे!

छाया-संभार-सारे!वर-कमल-करे! तार-हाराभिरामे!

वाणी-संदोह-देहे! भव-विरह-वरं देहि मे देवि! सारम्.४

गाथार्थ - संसार- दावा-नल स्तुति

संसार रुपी दावानल के ताप को शांत करने में जल समान, प्रगाढ मोह रुपी धूल को दूर करने में वायु समान, माया रुपी, पृथ्वी को चीरने में तीक्ष्ण हल समान और मेरु पर्वत समान स्थिर श्री महावीर स्वामी को मैं वंदन करता हूँ...१

भाव पूर्वक नमन करने वाले , सुरेंद्र, दानवेंद्र और नरेंद्रों के मुकुट में स्थित चपल कमल श्रेणियों से पूजित और नमन करने वाले लोगों के मनोवांछित संपूर्ण करने वाले जिनेश्वरों के उन चरणों में मैं श्रद्धा पूर्वक नमन करता हूँ...२

ज्ञान से गंभीर, सुंदर पद रचना रुप जल समूह से मनोहर, जीवों के प्रति अहिंसा की निरंतर लहरों के संगम से अति गहन देह वाले, चूलिका रुप भरती वाले, उत्तम आलापक रुपी रत्नों से व्याप्त और अति कठिनता पूर्वक पार पाये जाने वाले श्री महावीर स्वामी के आगम रुपी समुद्र की मैं अच्छी तरह से आदर पूर्वक उपासना करता हउ-...३

मूल पर्यंत कुछ डोलने से गिरे हुए पराग की अधिक सुगंध में आसक्त चपल भ्रमण समूह के झंकार शब्द से युक्त उत्तम निर्मल पंखुडी वाले कमल गृह की भूमि पर वास करने वाली, कांति पुंज से रमणीय, सुंदर कमल से युक्त हाथ वाली, देदीप्यमान हार से सुशोभित और (तीर्थंकरों की) वाणी के समुह रुप देहवाली हे श्रुत देवी ! मुझे (श्रुतज्ञान के) सार रुप मोक्ष का श्रेष्ठ वरदान दो....४

सूत्र परिचय

श्री हरिभद्रसूरि द्वारा रचित इस समसंस्कृत-प्राकृत स्तुति में श्री महावीर स्वामी, सर्व जिनेश्वर, जिन आगम और श्रुत देवी की स्तुति की गयी है.

पुक्खर-वर-दीवड्ढे सूत्र

पुक्खर-वर-दीवड्ठे, धायइ-संडे अ जंबु-दीवे अ.

भरहेरवय-विदेहे, धम्माइ-गरे नमंसामि...१

तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स सुर-गण-नरिंद-महिअस्स.

सीमा-धरस्स वंदे, पप्पकोडिअ-मोह जालस्स....२

जाई-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स,

कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहा-वहस्स.

को देवे-दाणव-नरिंद-गण-च्चिअस्स,

धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं?...३

सिद्धे भो! पयओ नमो जिण-मए नंदी सया संजमे,

देवं-नाग-सुवन्न-किन्नर-गण-स्सब्भूअ-भावच्चिए.

लोगो जत्थ पइट्ठिओ धम्मुत्तरं वड्ठउ....४

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तियाए... (सूत्र ११)....५

गाथार्थ - पुक्खर-वर-दीवड्ढे सूत्र

अर्ध पुष्कर -वर -द्वीप, घातकी खंड और जंबु द्वीप में स्थित भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में (श्रुत) धर्म की आदि करने वालों को मैं नमस्कार करता हूँ...१

अज्ञान रुपी अंधकार के समूह को नाश करने वाले, देवों और राजाओं के समूह

से पूजित, मर्यादा को धारण करने वाले और मोह जाल को तोडने वाले (श्रुत धर्म) को मैं वंदन करता हूँ...२

जन्म, जरा, मृत्यु और शोक को नाश करने वाले, पुष्कर कल्याण और विशाल सुख को देने वाले, देवेंद्र, दानवेंद्र, और नरेंद्रो के समूह से पूजित (श्रुत) धर्म के सार को प्राप्त कर कौन प्रमाद करेगा?...३

हे मनुष्यों ! मैं सिद्ध जैन मत को आदर पूर्वक नमस्कार करता हूँ. संयम में सदा वृद्धि करने वाला, देव, नाग कुमार, सुवर्ण कुमार, और किन्नर देवों के समूह द्वारा सच्चे भाव से पूजित, जिसमें लोक और यह जगत् प्रतिष्ठित है और तीनों लोक के मनुष्य और असुरादि का आधार रुप शाश्वत (श्रुत) धर्म वृद्धि को प्राप्त हो. विजयों से चारित्र धर्म वृद्धि को प्राप्त हो...५

श्रुत भगवान की (आराधना के लियें) मैं कायोत्सर्ग करता हूँ.

सूत्र परिचय

इस सूत्र में ठाई द्वीप में विचरने वाले एवं श्रुत ज्ञान की प्ररुपणा करने वाले तीर्थंकरो को नमस्कार करके श्रुतज्ञान की स्तुति की गयी है.

सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार-गयाणं परंपर-गयाणं,

लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं....१

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति,

तं देव-देव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं.....२

इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स.

संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा...३

उज्जिंत-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स.

तं धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठ-नेमिं नमंसामि...४

चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं.

परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु...४

वैयावच्च - गराणं सूत्र

वेयावच्च-गराणं, संति-गराणं, सम्मद्दिट्ठि-समाहि-गराणं करेमि काउस्सग्गं.....१

अन्नत्थ.... (सूत्र ७).....२

गाथार्थ वैयावच्च-गराणं सूत्र

वैयावृत्त्य करने वालों के निमित्त से, शांति करने वालों के निमित्त से और सम्यग् दृष्टियों को समाधि उत्पन्न कराने वाले (देवताओं) के निमित्त से मैं कायोत्सर्ग करता हूँ.....१

सूत्र परिचय

इस सूत्र से श्री संघ की शांति के लिए सम्यग् - दृष्टि वाले देवों का स्मरण किया गया है.

भगवान्हं आदि वन्दन सूत्र

भगवान्हं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्व-साधुहं....१

गाथार्थ - भगवान्हं आदि वन्दन सूत्र

भगवंतो को वंदन हो, आचार्यो को वंदन हो, उपाध्यायों को वंदन हो, सर्व साधुओं को वंदन हो...१

सूत्र परिचय

इस सूत्र के प्रत्येक पद को खमासमण सूत्र के साथ बोलकर भगवान आदि को नमस्कार किया जाता है.

देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ? सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं, सव्वस्स वि

देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छा मि दुक्कडं...१

गाथार्थ - देवसिस पडिक्कमणे ठाउं? सूत्र

दैवसिक प्रतिक्रमण में स्थिर रहूँ ? (इसकी) हे भगवान् ! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो ा मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ. दुष्ट चिंतन, दुष्ट भाषण और दुष्ट चेष्टाओं संबंधी मेरे सभी देवसिक दुष्कृत्य मिथ्या हों...१ सूत्र परिचय

दिन में किए समस्त पापों का संक्षिप्त वर्णन करके इस सूत्र से प्रतिक्रमण करने के लिये स्थिर हुआ जाता है.

इच्छामि ठामि सूत्र

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ,

काइओ, वाइओ, माणसिओ,

उस्सुत्तो, उम्मग्गो,अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ,

अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते,

सुए, सामाइए, तिण्हं गुणीणं चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं,

तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं, सिक्खा-वयाणं, बारसअविहस्स सावग-धम्मस्स,

जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं...१

गाथार्थ - इच्छामि ठामि सूत्र

मैं कायोत्सर्ग में स्थिर होना चाहता हूँ. काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा, उत्सूत्र कहने से, उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने सु े, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से, अनिच्छित वर्तन करने से, श्रावक संबंधी, दर्शन संबंधी देशविरति चारित्र संबंधी, श्रुतज्ञान

संबंधी, सामायिक संबंधी, तीन गुप्तियों संबंधी, चार कषाय संबंधी और पांच अणुव्रत में, तीन गुण व्रत में चार शिक्षा व्रत में बारह प्रकार के श्रावक धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो, मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुए हों मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हो.

सूत्र परिचय

इस सूत्र से श्रावक के आचार तथा बारह व्रतों में लगें अतिचारों का संक्षेप में वर्णन कर प्रतिक्रमण करने के लिये कायोत्सर्ग का संकल्प किया जाता

पंचाचार के अतिचार

नाणम्मि दंसण्णमि अ, चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि.

आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ.....१

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे.

वंजण-अत्थ-तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो....२

निस्संकि निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूठ-दिट्ठी अ.

उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ...३

पणिहाण-जोग-जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं.

एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो.....४

बारस-विहम्मि वि तवे, सब्भिंतर-बाहिरे कुसल-दिट्ठे.

अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वोसो तवायारो...५

अणसण-मूऊोअरिया, वित्ति-संखेवणं रसच्चाओ.

काय-किलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ...६

पायच्छितं विणआ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ.

झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होइ...७

अणिगूहिअ-बल-वीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो.

जंजुइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो.....८

गाथार्थ - पंचाचार के अतिचार

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य संबंधी आचारण आचार है.

इस तरह यह (आचार)पाँच प्रकार का कहा गया है...१

काल, विनय, बहुमान, उपधान, अनिह्नवता, व्यंजन, अर्थ और इन दोनों संबंधित-आठ प्रकार का ज्ञानाचार है....२

निःशंकता, निष्कंक्षता, निर्विचिकित्सा,अमूढ दृष्टि, प्रशंसा, स्थिरीकरण, वात्सल्य और प्रभावना-आठ प्रकार का (दर्शनाचार) है.....३

चित्त की समाधि पूर्वक पाँच समिति और तीन गुप्तियोें(का पालन) यह आठ प्रकार का चारित्राचार जानने योग्य है...४

बारहोें प्रकार का आच्यंतर और बाह्य तप जिनेश्वरों द्वारा कथित है. गलानि रहित और आजीविका के हेतु रहित वह तपाचार जानने योग्य है....५

उपवास, ऊनोदरता, वृत्ति संक्षेप, रस त्याग, काय क्लेश और संकोचन बाह्य तप है....६

प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और उत्सर्ग अभ्यंतर तप है...७

बल और वीर्य को न छिपाते हुए यथोक्त पराक्रम करना और पालन करने में यथाशक्ति (अपनी आत्मा को) जोडना-यह वीर्याचार जानने योग्य है.

सूत्र परिचय

इस सूत्र में श्रावक के आचार के पांच मुख्य भेदों एवं उनके प्रभेदों का वर्णन है.

सुगुरु वन्दना सूत्र

इच्छामि खमा-समणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो कायं काय-संकासं-खमणिज्जो मे! किलामो? अप्प-किलंताणं बहु-सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे जवणिज्जं च भे? खामेमि खमा-समणो! देवसिअं वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्न यराए जं किंचि मिच्छाए, मण दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व-कालिआए, सव्व-मिच्छो-वयाराए, सव्व-धम्मा-इक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो जओ, तस्स खमा-समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि....१

गाथार्थ - सुगुरु वन्दना सूत्र

हे क्षमाश्रमण! (अन्य व्यापार) त्याग कर शक्ति के अनुसार मैं वंदन करना चाहता हूँ. मुझे अवग्रह में प्रवेश करने के लिये आज्ञा प्रदान करो. अशुभ व्यापार को त्याग करके, आपके चरणो को मेरी काया (मेरे हाथ) द्वारा स्पर्श करने से हुए एद के लिए आप क्षमा करें. आपका दिन अल्प ग्लानि और अधिक सुख पूर्वक व्यतीत हुआ है? आपकी (संयम) यात्रा (ठीक चल रही है)? आपका मन और इंद्रीयाँ पीडा रहित है? हे क्षमाश्रमण! दिन में हुए अपराधों की मैं क्षमा मांगता हूँ. आवश्यक क्रिया के लिये (मैं अवग्रह में से बाहर जाता हूँ). दिन में क्षमाश्रमण के प्रति तैंतीस में से अन्य जो कोई भी आशातना कि हो (असका) मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. जो कोई मिथ्या भाव द्वारा, मन, वचन या काया के दुष्कृत्य द्वारा; क्रोध, मान, माया या लोभ से; सर्व काल में, सर्व प्रकार के मिथ्या उपचारों से या सर्व प्रकार के धर्म अतिक्रमण से हुए आशातना द्वारा मुझसे जो कोई अतिचार हुआ हो, हे क्षमाश्रमण! उनका मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. निंदा करता हूँ, गर्हा करता हूँ. एवं (अशुभ प्रवृत्तियों वाली) आत्मा का त्याग करता हूँ.

सूत्र परिचय

इस सूत्र से सद्गुरुओं को वंदन करके, उनके प्रति लगे दोषो के लिये क्षमा मांगी है. (दूसरी बार वंदन करते समय आवस्सियाए पद नहीं बोलना चाहिये.)

देवसिअं आलोउं? सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं? इच्छं, आलोएमि, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउगो, नाणे, दंसणे, चरिता-चरिते, सुए, सामाइए, तिण्हं, गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं सस्क्खा-वयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं...१

गाथार्थ - देवसिअं आलोउ? सूत्र

हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो. दिवस संबंधी (दिवस में किये अपराधों की) आलोचना करुं? आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं. मैं अलोचना करता हूं. काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा, उत्सूत्र कहने से, उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने से, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से, अनिच्छित वर्तन करने से,

श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से, ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी, देश-विरति चारित्र संबंधी, श्रुतज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी, तीन गुप्तियों संबंधी, चार कषाय संबंधी और पांच अणुव्रत में, तीन गुण व्रत में, चार शीक्षा व्रत में- बारह प्रकार के श्रावक धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो, मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुए हों, मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हो.

सूत्र परिचय

इस सूत्र द्वारा श्रावक के आचार तथा बारह व्रतों में लगे अतिचारों का संक्षेप

में वर्णन कर आलोचना की जाती है.

सातलाख सूत्र

सात लाख पृण्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय,

दस लाख प्रत्येक वनस्पति-काय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय,

दो लाख द्वींद्रीय, दो लाख त्रींद्रिय, दो लाख चउरिंद्रिय,

चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंन्द्रिय,

चौदह लाख मनुष्य- इस तरह चौरासी लाख जीव-योनी में से

मेरे जीव ने जो कोइ जीव-हिंसा की हो, करायी हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो,

उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं....१

गाथार्थ - सातलाख सूत्र

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख, तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख द्वींद्रिय, दो लाख त्रींद्रिय, दो लाख चउरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य- इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में मेरे जीव ने जो कोइ जीव-हींसा की हो, करायी हो. करते हुए अनुमोलन कीया हो. वे सभी मेरे दुष्टकृत्य मन-वचन-काया से मिथ्या हो.....१

सूत्र परिचय

इस सूत्र से चौरासी लाख जीव-योनी से उत्पन्न होनेवाले जीवों की जो विराधना (हिंसा) हुई हो उसके लिये मिच्छा मि दुक्कडं देने म आया है.

अठारह पाप स्थानक

पहला प्राणातिपात, दुसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नौवां लोभ, दसवां राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रति-अरति, सोलहवां पर-परिवाद, सत्रहवां माया-मृषावाद, मठारहवां मिथ्यात्व-शल्य-इन अठारह पाप-स्थानों मे से मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं...१

गाथार्थ - अठारह पाप स्थानक

पहला प्राणातिपात, दुसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नौवां लोभ, दसवां राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रति-अरति, सोलहवां पर-परिवाद, सत्रहवां माया-मृषावाद, मठारहवां मिथ्यात्व-शल्य-इन अठारह पाप-स्थानों मे से मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं...१

सूत्र परिचय

इस सूत्र मे अठारह प्रकार से किए जानेवाले पापों के लिए क्षमा मांगी गयी है.

सव्वस्स वि सूत्र

सव्विस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,

इच्छा - कारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.....१

गाथार्थ - सव्वस्स वि सूत्र

दुष्ट चिंतन, दुष्ट भाषण, और दुष्ट प्रवृत्ति संबंधी दिन में लगे सर्व (अतिचारों का प्रतिक्रमण करने के लिये) हे भगवान! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो. मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ. मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों.....१

सूत्र परिचय इस सूत्र से पापों को संक्षेप में कहकर प्रतिक्रमण किया जाता है

इच्छामि पडिक्कमिउं? सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं? जो मे देवसिओ, अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं...१

गाथार्थ - इच्छामि पडिक्कमिउं? सूत्र

मै प्रतिक्रमण करुँ? काया से, वाणी से, मन से, उत्सूत्र कहने से, उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने से, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से, अनिच्छित वर्तन करने से, श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से, ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी, देशविरति चारित्र संबंधी, श्रुतज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी, ती गुप्तियों संबंधी, चार कषाय संबंधी औक पांच अणुव्रण में, तीन गुण व्रत में, चार शिक्षा व्रतमें- बारह प्रकार के श्रावक धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो, मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुए हो मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हो.

सूत्र परिचय

इस सूत्र द्वारा श्रावक के आचार तथा बारह व्रतों में लगे अतिचारों को संक्षेप में वर्णन कर प्रतिक्रमण किया जाता है.

वंदितुं सूत्र

वंदितुं सव्व सिद्धे- धम्मायरिए अ सव्व-साहू अ.

इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स....१

जो मे वयाइयारो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ

सुहुमो व बायरो वा, तं निंदे तं च गारिहामि....२

दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे

कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसिं सव्वं....३

जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं

रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गारिहामि...४

आगमणे - निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे,

अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...५

संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु.

सम्मत्तस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...६

छक्काय-समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा.

अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे....७

पंचण्हमणु-व्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्हमइयारे,

सिक्खाण् च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...८

पठमे अणु-व्वयम्मि, थूलग - पाणाइवाय-विरईओ,

आयरिअ-मप्पसत्थेप इत्थ पमाय-प्पसंगेणं...९

वह-बंध-छवि-च्छेए, अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए,

पठम-वयस्स-इयारे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...१०

बीए अणु व्वयम्मि, परिथूभग-अलिय-वयण-विरइओ,

आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं....११

सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ.

बीय वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं... १२

तइएअणु व्वयम्मि, थूभग-परदव्व-हरण-विरईओ,

आयरिअ-मप्पसत्थे इईत्थ पमाय-प्पसंगेणं...१३

तेनाहड-प्पओगे, तप्पडिरुवे विरुद्ध गमणे अ.

कूड-तुल कूड-माणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...१४

चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदार-गमण विरईओ,

आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं...१५

अपरिग्गहिआ-इत्तर, अणंग-विवाह-तिव्व-अणुरागे,

चउत्थवयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...१६

इत्तो अणु-व्वए पंचमंमि, आयरिअ-मप्पसत्थम्मि,

परिणाम-परिच्छेए, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं...१७

धण-धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे,

दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...१८

गम६स्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च.

वुड्ठी सइ-अंतरद्धा, पठमम्मि गुण-व्वए निंदे...१९

मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ.

उवभोग -परिभोगे, बीअम्मि गुण-व्वए निंदे...२०

सचित्ते पडिबद्धे, अपोलि-दुप्पोलिलं च आहारे.

तुच्छेसहि-भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...२१

इ्गाली-वण-साडी-भाडी सुवज्झजए कम्मं
वाणीझजं चेव दंत-भल्ख-रस-केस-विस-विसंय...२२

एवं खु जंत-पिल्लण कम्मं, निल्लंछणं च दव-दाणं.

सर-दह-तलाय-सोसं, असई-पोसं च वज्जिज्जा...२३

सत्थिग्गि-मुसल-जंतग-तण-कट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे.

दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं...२४

न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग-विलेवणे- सद्द-रुव-रस-गंधे

वत्थासण-आभरणे, पडिकमे देसिअं सव्वं...२५

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-आहिगरण-भोग-अइरित्ते,

दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि-गुण-व्वए निंदे....२६

तिविहे दुप्पणिहाणे, अण-वट्ठाणे तहा सइ-विहूणे,

सामाइय-वितह-कए, पठमे सिक्खा-वए निंदे...२७

आणवणे पेसवणे, सदे रुवे अ पुग्गल-क्खेवे,

देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खा-वए निंदे...२८

संथारुच्चार-विहि-पमाय तह चेव भोयणा-भोए,

पोसह-विहि-विवरिए, तइए सिक्खा-वए निंदे...२९

सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव,

कालाइक्कम-दाणे, चउत्थे सिक्खा-वए निंदे...३०

सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजए सु अणुकंपा,

रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि...३१

साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु,

संते फासुअ-दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि...३२

इह-लोए पर लोए, जीविअ-मरणे अ आसंस-पओगे,

पंच-विहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते....३३

काएण काइअस्स, पडिकक्मे वाइअस्स वायाए,

मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स...३४

वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु,सन्ना कसाय-दंडेसु,

गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे...३५

सम्मद्दिट्ठि जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि,

अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ....३६

तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तर-गुणं च,

खिप्पं उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो...३७

जहा विसं कुट्ठआयं, मंत-मूल-विसारया,

विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवई निव्विसं...३८

एवं अट्ठ-विहं कम्मं, राग-दोस-समजजिअं,

आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ...३९

कय पावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंविअ गुरु-सगासे,

होई अइरेग-लहुओ, ओहरिअ-भरुव्व भारवहो...४०

आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ,

दुक्खाणमंत-किरिअं, काही अचिरेण काभेण...४१

आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण-काले,

मूल-गुण-उत्तर गुणे, तं निंदे तं च गारिहामि...४२

तस्स धम्मस्स केवलि - पन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओ मि,

आराहणाए, विरओ मि विराहणाए,

तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं...४३

जावंति चेइआइं, उड्ठे अ अहे अ तिरिअ - लोए अ,

सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं...४४

जावंत के वि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ,

सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविएप तिदंड विरयाणं...४५

चिर-संचिय-पाव-पणासणीइ, भव-सय-सहस्स-महणीए,

चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, वोलंतु मे दिअहा...४६

मम मंगल-मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ,

सम्म-द्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च....४७

पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण-मकरणे पडिक्कमणं,

असद्दहणे अ तहा, विवरीअ-परुवणाए अ...४८

खामेमि सव्व जीव, सव्वे जीवा खमंतु मे,

मित्तीमे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ...४९

एवमहं आलोइअ, निंदिअ-गरहिअ-दुगंछिअं सम्मं,

तिविएण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं...५०

गाथार्थ - वंदितु सूत्र

सर्व सिद्ध भगवंत, धर्माचार्य और सर्व साधुओं को वंदन कर के श्रावक के धर्म में लगे अतिचारों का मैं प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ.....१

छोटे या बडे, जो अतिचार मुझे व्रत तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि में इलगें हों, उनकी मैं निंदा करता हूँ और गर्हा करता हूँ...२

दो प्रकार के परिग्रह के कारण और अनेक प्रकार के पापमय कार्य करने और कराने से दिन में लगे सर्व पापों का में प्रतिक्रमण करता हूँ...३

ंइंद्रिय, चार प्रकार के अप्रशस्त कषाय और राग या द्वेष से जो (अशुभ कर्म) बंधे हों, उनकी मैं निंदा करता हूँ और गर्हा करता हूँ...४

आने से, जाने से, खडे रहने से, फिरने से, भूल से, (कीसी के) दबाव से और बंधन के कारण दिन में लगे सर्व (अतिचारों) का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...५

शंका, आकांशा, विचिकित्सा, कुलिंगियों की प्रशंसा और परिचय-सम्यक्त्व के (इन पाँच) अतिचारों से दिन में लगे सर्व (पापों) का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...६

छः काय के जीवों की विराधना से और अपने लिये, दूसरो के लिये या दोनों के

लिये पकाने से या पकवाने से जो दोष (लगे हों) उनकी मैं निंदा करता हूँ...

पाँच अणु-व्रत तीन गुण व्रत और चार शिक्षा व्रत संबंधी दिन मैं लगे सर्व (अतिचारों) की मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...८

प्रथम अणु-व्रत में स्थूल प्राणातिपात से निवृत्ति में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहां लगे अतिचारों का (मैं प्रतिक्रमण करता हूँ).....९

मारने से, बांधने से, अंगोपांग को छेदने से, अधिक बोझ लादने से और आहार-पानी का विच्छेद करने से दिन में प्रथम व्रत में लगे सर्व अतिचारों का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ.....१०

दूसरे अणु-व्रत में स्थूल मृषावाद से निवृत्ति में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहाँ लगे अतिचारों का (मैं प्रतिक्रमण करता हूँ)....११

सहसाभ्याख्यान से, रहस्याभ्याख्यान से, स्व-दरा मंत्र भेद से, मिथ्या उपदेश से और झूठे लेख लिखने से दूसरे व्रत में दिन में लगे सर्व अतिचारों का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...१२

तीसरे अणु-व्रत में स्थूल पर-द्रव्य हरण से निवृत्ति में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहां लगे अतिचारों का (मै प्रतिक्रमण करता हूँ) ...१३

चोर द्वारा लायी वस्तु को रखने से, चोर को प्रोत्साहक वचन बोलने से, नकली माल बेचने से, राज्य विरुद्ध कार्य करने से, गलत तोलने से और गलत मापने से दिन में लगे सर्व (अतिचारों) का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...१४

चौथे अणु-व्रत में नित्य पर - स्त्री गमन से निवृत्ति में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहां लगे अतिचारो का (मैं प्रतिक्रमण करता हूँ)...१५

अविवाहिता के साथ गमन करने से, अल्प समय के लिये रखी स्त्री के साथ गमन करने से, काम वासना जाग्रत करने वाली क्रियाओं से, दूसरों के विवाह करनो से और विषय भोग में तीव्र अनुराग रखने से दिन में चौथे व्रत में तीव्र अनुराग रखने से दिन में चौथे व्रत में लगे अतिचारों का (में प्रतिक्रमण करता हूँ)....१७

धन, धान्य, जमीन, मकान, चांदी, सोना, अन्य धातु, द्विपद और चतुष्पद के परिणाम में दिन में लगे सर्व (अतिचारों) का मैं प्रिक्रमण करता हूँ...१८

ऊर्ध्व, अधो और तिर्यंग्, दिशाओ में गगन के परिणाम मंे ं वुद्धि होने से और विस्मृति होने से प्रथम व्रत में (लगे अतिचारों की) मैं निंदा करता हूँ....१९

मध, मांस, पुष्प, फल, गंध और माला के उपभोग करने से दूसरे गुण व्रत में (लगे अतिचारों की) मैं निंदा करता हूं...२०

सचित, (सचित से) संलग्न, अपक्व, अर्धपक्व आहार और तुच्छ वनस्पति के भक्षण से दिन में लगे सर्व (अतिचारों का) मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...२१

अंगार, वन, शाटक, भाटक, विस्फोटक कार्य, और इसी प्रकार दंत, भाख, रस, केश और विष संबंधी व्यापार त्यागने योग्य है...२२

वस्तुतः इसी प्रकार यंत्र द्वारा पीसने का, निर्लांछन करने का, आग लगाने का, सरोवर, स्त्रोत, तालाब सुखाने का और असती पोषण का कार्य त्यागने योग्य है....२३

शस्त्र, अग्नि, मूसल, चक्की, तृण, काष्ठ, मंत्र, मूल और औषधि को देने से या दिलाने से दिन में लगे सर्व (अतिचारों) का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...२४

स्नान, उद्वर्वन, रंगाई, विलेपन, शब्द, रुप, रंग, रस, गंध, वस्त्र, आसन और आभरण के विषय में दिन में लगे सर्व (अतिचारों) का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...२५

काम विकार, अधम, चेष्टाओ, के कारण, वाचालता, हिंसक साधनों को तैयार रखने और भोग की अतिरेकता के कारण अनर्थ दंड द्वारा तीसरे गुण व्रत में (लगे अतिचारों की) मैं निंदा करता हूँ...२६

तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान, अविधि पूर्वक करने और विस्मृति के कारण

सामायिक की विराधना द्वारा प्रथम शिक्षा व्रत में (लगे अतिचारों की) मैं निंदा करता हूँ...२७

वस्तु को बाहर से मंगवाने से और बाहर भेजने से, शब्द करके, रु, दिखाकर या वस्तु फेंककर अपनी उपस्थिती बताने से देसावगाशिक के दूसरे शिक्षा व्रत में (लगे अतिचारों की) मैं निंदा करता हूँ...२८

संथारा और विसर्जन की विधि में हुए प्रमाद से और इसी प्रकार भोजन आदि की चिंता के कारण पौषध की विधि में विपरितता से तीसरे शिक्षाव्रण में (लगे अतिचारों की)मैं निंदा करता हूँ...२९

सचित वस्तु डालने, ठंकने से, बहान, इर्ष्या करने से और समय वीत जाने के बाद दान देने से चौथे शिक्षा व्रत में (लगे अतिचारों की)मैं निंदा करता हूँ...३०

सुखी, दूःखी और अस्वंयत साधुओं की जो भक्ति राग से या द्वेष से की हो, मैं उसकी (मेरे उन दुष्कर्म की) निंदा करता हूँ...३१

पांच प्रकार के अतिचार - इस लोक, परलोक, जीवन, मृत्यु औक (काम-भोग की इच्छा) की प्रकृति मुझे मृत्यु के समय न हो....३३

(अशुभ) काया , वचन, और मन (योग) द्वारा सर्व व्रतों में भगे अतिचारों का (शुभ) काया, वचन, और मन (योग) से मैं प्रतिक्रमण करता हूँ...३४

वंदन, व्रत, शिक्षा, गौरव, संज्ञा, कषाय, दंड, गुप्ति, और समितियों संबंधी जो अतिचार लगे हो, उनीक मैं निंदा करता हूँ...३५

सम्यग् दृष्टि जीव यदपि वास्तव में थोडा पाप करता भी है (तो) उसे थोडा ही कर्म बंध होता है क्योंकि (वह पाप) निर्दयता पूर्वक नहीं करता है...३६

प्रतिक्रमण करके, पश्चात्ताप, करके और प्रायश्चित करके उसको (उस पाप को) भी अवश्य ही (वह / सम्यग्दृष्टि जीव) शीघ्र नष्ट करता है जैसे शिक्षित वैध रोग को (नष्ट करता है)...३७

जैसे पेट में गये हुए जहर को मंत्र और मूल का जानकर वैध मंत्र द्वारा नष्ट

करता है और उससे वह निर्विष हो जाता है...३८

इसी प्रकार राग और द्वेष द्वारा उपार्जित आठ प्रकार के कर्म को आलोचना और निंदा करके सुश्रावक शीघ्र नष्ट कर देता है..३९

भार उतारु हुए भार वाहक की तरह पाप किया हुआ मनुष्य भी गुरु समक्ष आलोचना और निंदा करके बहुत हल्का होता है...४०

यधपि श्रावक बहुत कर्मवाला होता है, (फिर भी वह) इन आवश्यकों द्वारा दुःखों का अंत थोडे समय में करता है...४१

मुल गुण और उत्तर गुण संबंधी आलोचना बहुत प्रकार की है, और प्रतिक्रमण के समय (जो अतिचार) याद न आये हों, उनकी (उन अतिचारोकी) मैं निंदा करता हूँ और गर्हा करता हूँ...४२

केवली भगवंत द्वारा प्ररुपित उस धर्म की आराधना के लिये में तत्पर हूँ. तीन प्रकार से प्रतिक्रमण करत हुए मैं चौबीस जिनेश्वरो को वंदन करता हूँ...४३

ऊर्ध्व लोक, अधो लोक और तिर्यंग् लोक में जितनी जिन प्रतिमाएं है यहां रहा हुआ मैं वहां रही हुई उन सब प्रतिमाओं को वंदन करता हूं...४४

भरत, ऐरावत, और महाविदेह क्षेत्र में जितने कोई भी साधु तीन प्रकार से, तीन दंड से निर्वृत है. उन सबको मैं प्रणाम करता हूं...४५

चिर काल से संचित पाप को नष्ट करने वाली और लाखो भव को नष्ट करने वाली चौबीस जिनेश्वरों के मुख से कथित कथाओं से मेरे दिन व्यतीत हें...४६

अरिहंत, सिद्ध, साधु, श्रुत ज्ञान और चारित्र धर्म मुझे मंगल रुप हो और सम्यग्दृष्टि देव समाधि और बोधि प्रदान करे...४७

निषिद्ध कार्य करने से, करने योग्य कार्य न करने से, (जिन वचनों में) अश्रद्धा से और विचरित प्ररुपणा के कारण प्रतिक्रमण (करना आवश्यक है)...४८

सर्व जीवों को मैं क्षमा करता हूँ, सर्व जीव मुझे क्षमा करें. सर्व जीवों के साथ मेरी मैत्री है. मेरा किसी के साथ वैर नहीं है....४९

इस तरह सम्यक् प्रकार से आलोचना, निंदा, गर्हा और अरुचि व्यक्त करके, तीन प्रकार से (मन-वचन-काया से) प्रतिक्रमण करते हुए चौवीस जिनेश्वरो को मैं वंदन करता हूँ...५०

सूत्र परिचय

इस सूत्र द्वारा, बारह व्रत आदि रुप श्रावक धर्म में विविध प्रकार से लगने वाले दोषों को गुरु समक्ष स्वीकार कर, पश्चात्ताप पूर्वक उन दोषों की निंदा की गयी है, इस सूत्र के अन्त में प्रतिक्रमण का महत्व बताकर, सर्व जिनेश्वर, चैत्य एवं साधुओं को वंदन कर, सर्व जीवों को क्षमा कर, सर्व जीवों से क्षमा मांगी गयी है.

अब्भुट्ठिओमि सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर देवसिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि देवसिअं, जं किंचिं

अपत्तिअं, पर-पत्तिअं, भत्ते, पाणे; विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे;अंतर-भासाए;जं किंचि मुज्झ विणय-परिहिणं, सुहुमं वा, बायरं वा; तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं...१

गाथार्थ - अब्भुट्ठिओमि सूत्र

हे भगवन्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो ा दिन में किये हुए (अपराधों की) क्षमा मांगने के लिये मैं उपस्थित हुआ हूँ. आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ. दिन में हुए (अपराधों की) मैं क्षमा मांगता हूँ. आहार -पानी में, विनय में, वैयावृत्य में, बोलने से, बीच में बोलने से, टीका करने से जो कोई अप्रीतिकारक, विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो, छोटा या बडा विनय रहित (वर्णन) मुझसे हुआ हो, (जो) आप जानते हो, मैं नहीं जानता हूँ, मेरे वे अपराध मिथ्या होे...१

सूत्र परिचय

इस सूत्र से गुरु महाराज के प्रति हुए अविनय के लिये क्षमा मांगी जाती है.

आयरिय-उवज्झाए सूत्र

आयरिय-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ.

जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि....१

सव्वस्स समण-संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे,

सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि...२

सव्वस्स जीव-रासिस्स, भावओ धम्म-निहिअ-निअ-चित्तो,

सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि...३

गाथार्थ -आयरिय-उवज्झाए सूत्र

आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मिक, कुल और गण के प्रति मैंने जो कोई कषाय किये हों, उन सबकी मैं तीन प्रकार सें क्षमा माँगता हूँ...१

पूज्य सकल श्रमण संघ को मस्तक पर अंजलि कर, सबसे क्षमा मांगकर, मैं भी सबको क्षमा करता हूँ...२

अपने मन को धर्म भावना में स्थापितकर सर्व जीवों के समूह से क्षमा मांगकर, मैं सबको क्षमा करता हूँ...३

सूत्र परिचय

इस सूत्र से आचार्य आदि, सकल संघ तथा सर्व जीवों के प्रति किये हुए अपरांधो के लिए क्षमा याचना की जाती है.

सुअ-देवया स्तुति

सुअ-देवया भगवई, नाणा-वरणीय-कम्म-संघायं,

तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअ-सायरे भत्ती...१

गाथार्थ - सुअ-देवया स्तुति

प्रवचन रुपी समुद्र में जिनकी सदा भक्ति है, उनके ज्ञानावरणीय कर्म के समुद्र को पूज्य श्रुत देवी क्षय करो...१ सूत्र परिचय

श्रुत देवता की इस स्तुति के पुरुष ही बोलें.

कमल-दल स्तुति

कमल-दल-विपुल-नयना, कमल-मुखी कमल गर्भ-सम-गौरी,

कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुत-देवता सिद्धिम्...१

गाथार्थ - कमल-दल स्तुति

कमल पत्र जैसे विशाल नेत्रोंवाली, कमल जैसे मुखवाली, कमल के मध्य भाग जैसे गौर वर्णवाली और कमल पर स्थित पूज्य श्रुत देवी सिद्धि प्रदान करे...१

सूत्र परिचय

श्रुत-देवता की इस स्तुति को स्त्रियां ही बोलें.

जीसे खित्ते स्तुति

जीसे खित्ते साहू, दंसण-नाणेहिं चरण-सहिएहिं,

साहंति मुक्ख-मग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ...१

गाथार्थ - जीसे खित्ते स्तुति

जिनके क्षेत्र में साधु दर्शन-ज्ञान-चारित्र द्वारा मोक्ष मार्ग की साधना करते है, वह (क्षेत्र) देवी

विघ्नो का हरण करे...१ सूत्र परिचय

क्षेत्र-देवता की यह स्तुति पुरुष ही बोलें.

यस्याः क्षेत्रं स्तुति

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया,

सा क्षेत्र-देवता नित्यं, भूयान्नः सुख-दायिनी...१

गाथार्थ - यस्याः क्षेत्रं स्तुति

जिसके क्षेत्र मे. साधुओं द्वारा क्रिया की साधना की जाती हैं, वह क्षेत्र देवी हमें सदा सुख देनेवाली हो...१

सूत्र परिचय

क्षेत्र देवता की इस स्तुति को स्त्रियां नित्य, पुरुष पक्खी आदि प्रतिक्रमण में और विहार में साधु भगवंत दैवसिक प्रतिक्रमण में बोलते है

ज्ञानादि-गुण स्तुति

ज्ञानादि-गुण-युतानां, नित्यं स्वाध्याय-संयम-रतानाम्,

विदधातु भवन-देवी, शिवं सदा सर्व-साधुनाम्...१

गाथार्थ - ज्ञानादि-गुण स्तुति

ज्ञानादि गुणों से युक्त, नित्य स्वाध्याय और संयम में लीन सर्व साधुओं का भवन देवी सदा कल्याण करे....१

सूत्र परिचय

भवन देवता की यह स्तुति पक्खी आदि प्रतिक्रमण में

एवं विहार में साधु भगवंतो द्वारा दैवसिक प्रतिक्रमण मेे बोली जाती है.

नमोस्तु वर्द्धमानाय स्तुति

नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा,

तज्जया-वाप्त-मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम्....१

येषां विकचा-रविन्द-राज्या, ज्यायः क्रम-कमलावलिं दधत्या,

सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं,कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्रा...२

कषाय-तापा-र्दित-जन्तु-निर्वुतिं, करोति यो जैन-मुखाम्बुदोद्-गतः,

स शुक्र-मासोद्भव-वृष्टि-सन्निभो,दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्...३

गाथार्थ - नमोस्तु वर्द्धमानाय स्तुति

कर्मों के साथ स्पर्धा करते हुए और उन पर विजय द्वारा मोक्ष प्राप्त किये हुए और मिथ्यात्वियों के लिये अगम्य श्री महावीर स्वामी को नमस्कार हो....१

वे जिनेंद्र मोक्ष के लिये हों जिनकी उत्तम चरण कमल की श्रेणी को धारण करने वाली विकसित

कमलों की पंक्ति ने (मानों) कहा कि समान के साथ इस प्रकार समागम होना प्रशंसनीय है...२

जयेष्ठ मास में होने वाली वृष्टि के समान जो कषाय रुपी ताप से पीडित प्राणियों की शांति करता है, जिनेश्वर के मुख रुपी मेघ से प्रगटित वाणी का वह समूह पर अनुग्रह धारण करो...३.

सूत्र परिचय

श्री महावीर स्वामी, सर्व तीर्थंकर एवं जिन वाणी की इस स्तुति को देवसिय आदि प्रतिक्रमण में पुरुष ही बोलें.

विशाल-लोचन स्तुति

विशाल-लोचन-दलं, प्रोधद्-दन्तांशु केसरम्, प्रातर्वीर-जिनेन्द्रस्य, मुख पदमं पुनातु वः.....१

येषामभिषेक-कर्म कृत्वा, मत्ता हर्ष-भरात् सुखं सुरेन्द्राः,

तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः....२

कलंक-निर्मुक्त-ममुक्त-पूर्णतं, कुतर्क-राहु-ग्रसनं सदोदयम्.

अपूर्व-चन्द्रं जिन-चन्द-भाषितं, दिना-गमे नौमि बुधैर्नमस्कुतम्....३

गाथार्थ - विशाल-लोचन स्तुति

विशाल नेत्र रुपी पत्र वाला और देदीप्यमान दंत-किरण रुपी पुष्प केसरवाला, श्री महावीर जिनेश्वर का मुख रुपी कमल, प्रातः काल में तुम्हें पवित्र करो....१

जिनकी अभिषेक क्रिया करके हर्ष समूह से मत्त बने हुए सुरेन्द्र स्वर्ग सुख को तृण मात्र भी नहीं मानते, वे जिनेश्वर प्रातःकाल में शिव सुख के लिये हों....२

कलंक से रहित, पूर्णता का त्याग न करने वाले, कुतर्क रुपी राहु को ग्रसने वाले, सदा उदयवान, जिनेश्वरों द्वारा कथित और पंडितों द्वारा नमस्कृत (आगम रुपी) अपूर्व चंद्र की मैं प्रातः काल मैं स्तुति करता हूँ....३

सूत्र परिचय

श्री महावीर स्वामी सर्व तीर्थकर एवं जिन आगम की इस स्तुनि को राइअ प्रतिक्रमण में पुरुष ही बोलें.

वर कनक स्तुति

वर कनक-शंख-विद्रुम- मरकत-धन-सन्निभं विगत-मोहम्,

सप्तति-शतं जिनानां, सर्वामर-पूजितं वन्दे...१

गाथार्थ - वर कनक स्तुति

श्रैष्ठ सुवर्ण, शंख, विद्रुम (मूंगा/ परवाला) नीलम, और मेघ जैसे (पीत, श्वेत, रक्त, नील और श्याम) वर्ण वाले, मोह रहित और सर्व देवों से पूजित एक सौ सित्तर

जिनेश्वरों को में वंदन करता हूँ...१

सूत्र परिचय

इस स्तुति से एक सौ सित्तर तीर्थंकरों को वन्दन किया जाता है. इसे पुरुष ही बोलें.

अड्ठाइज्जेसु सूत्र

अड्ठाइज्जेसु दीव-समुद्देसु, पनरसु कम्म-भूमीसु;

जावंत के वि साहू, रय-हरण-गुच्छ-पडिग्गह-धरा...१

पंच-महा-व्वय-धरा, अड्ठारस-सहस्स-सीलंग-धरा;

अक्खुया-यार-चरित्ता ते सव्वे सिरसा मणसा, मत्थएण वंदामि...२

गाथार्थ - अड्ठाइज्जेसु सूत्र

अठाई द्वीप और समुद्र की पंद्रह कर्म भूमियों में जो कोई साधु रजोहरण, गुच्छक एवं पात्र को धारण करने वाले....१

पाँच महाव्रत को धारण करनेवाले, अट्ठारह हजार शील के अंगों को धारण करने वाले, अखंड आचार और चारित्र को धारण करने वाले है, उन, सबको शरीर, मन और मस्तक से वंदन करता हूँ...२

सूत्र परिचय

इस सूत्र से अठाइ द्वीप में स्थित मुनियों को वन्दन किया जाता है.

लघु शांति स्तव

शान्तिं शान्ति-निशान्तं, शान्तं शान्ता -शिव नमस्कृत्य,

स्तोतुः शान्ति-निमित्तं, मन्त्र-पदैः शान्तये स्तौमि....१

ओमिति निश्चित्-वचसे, नमो नमो भगवतेर्हते पूजाम्,

शान्ति-जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम्...२

सकलातिशेषक-महा-संपत्ति-समन्विताय शस्याय,

त्रैलोक्य-पूजिताय च, नमो नमः शान्ति-देवाय...३

सर्वामर-सुसमूह-स्वामिक-संपूजिताय न जिताय,

भुवन-जन-पालनोधत-तमाय सततं नमस्तस्मै...४

सर्व दुरितौध-नाशन-कराय सर्वाशिव-प्रशमनाय,

दुष्ट ग्रह-भूत-पिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय...५

यस्येति नाम-मन्त्र-प्रधान-वाक्योपयोग-कृत-तोषा,

विजया कुरुते जन-हित-मिति च नुता नमत तं शान्तिम्..६

भवतु नमस्त् भगवति!, विजये! सुजये! परा-परैरजिते!,

अपराजिते! जगत्यां, जयतीति जयावहे! भवति....७

सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र-कल्याण-मंगल-प्रददे!

साधुनां च सदा शिव-सुतुष्टि-पुष्टि-प्रदे! जीयाय्...८

भव्यानां कृत-सिद्धे! निर्वृत-निर्वाण-जननि! सत्त्वानाम्,

अभय-प्रदान-निरते!, नमोस्तु-स्वस्ति-प्रद्! तुभ्यम्...९

भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे! नित्यमुद्यते!देवि!,

सम्यग्-दृष्टिनां धुति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय...१०

जिन-शानस-निरतानां, शान्ति-नतानां च जगति जनतानाम्,

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि!, जय देवि! विजयस्व...११

सलिला-नल-विष-विषधर-दृष्ट-ग्रह-राज-रोग-रण-भयतः,

राक्षस-रिपु-गण-मारि-चौरित-श्वापदा-दिभ्यः...१२

खथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति,

तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम्...१३

भगवति! गुणवति! शिव-शान्ति-

तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्,

ओमिति नमो नमो हाँ ही ँ हूँ हः,

यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा.....१४

एवं - यन्नामाक्षर-पुरस्सरं, संस्तुता जया देवी,

कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै....१५

इति पूर्व-सूरि-दर्शित -मन्त्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः,

सलिलादि-भय-विनाशी, शान्त्यादि-करश्च भक्तिमताम्....१६

यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथा-योगम्,

स हि शान्ति-पदं यायात्, सूरिः श्री-मान-देवश्च...१७

उपसर्गाः क्षयं यायात्, छिघन्ते विघ्न-वल्लयः,

मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे....१८

सर्व-मंगल-मांगल्यं,सर्व कल्याण-कारणम्,

प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम्....१९

गाथार्थ - लघु-शान्ति स्तव

शान्ति के गृह समान, शान्त-रस से युक्त, अशिव शांत हो चुके है (जिनके, ऐसे)

स्तुति करने वालों की शांति के लिये श्री शांतिनाथ भगवान को नमस्कार करके, शांति में निमित्तभूत मंत्र पदों से मैं स्तुति करता हूँ...१

ॐ ऐसे निश्चित वचनवाले, पूजा के योग्य भगवान, जयवान्, यशस्वी और योगीश्वर श्री शांतिनाथ जिनेश्वर को वारंवर नमस्कार हो...२

सर्व अतिशय रुपी महा संपति से युक्त, प्रशस्त और त्रैलोक्य पूजित श्री शांतिनाथ भगवान को वारंवार नमस्कार हो...३

सर्व देव समूह के स्वामियों द्वारा विशिष्ट प्रकार से पूजित, अजेय, विश्व के लोगों का रक्षण करने में सदा तत्पर रहने वाले... उनको (श्री शांतिनाथ भगवान को) सदा नमस्कार हो...४

सर्व प्रकार के भयों का नाश करने वाले, सर्व उपद्रवों का शमन करनेवाले, दृष्ट ग्रह, भूत, पिशाच, और शाकिनीयों के उत्पात का संपूर्णतया नाश करने वाले (उनको (श्री शांतिनाथ भगवान को) सदा नमस्कार हो)...५

उन श्री शांतिनाथ भगवान को नमस्कार करो, जिनके इस तरह नाम मंत्रवाले उत्तम अनुष्ठानों सें संतुक्ष्ऊ विजया देवी लोगों का हित करती है, इससे ही (उनकी - विजया देवी की) स्तुति की गयी है...६

हे भगवती! हे विजया! हे सुजया! हे अजिता! हे अपराजिता!, हे जयावहा!, हे भवती! पर और अपर रहस्यों से जगत में (आप) जय को प्राप्त होती हो. इसलिये आपको नमस्कार हो...७-१

ज्ञानादि एश्वर्य गुणों से युक्त, श्रेष्ठ जयवाली, अन्य श्रेष्ठ देवों से अजेय, अपराजित और विखय दिलाने वाली है श्रीमती विजया देवी! जगत में आप जय पाती हो, इसलिये आपकी नमस्कार हो....७-२

और सकल संघ को भद्र, कल्याण और मंगल प्रदान करने वाली एवं साधुओं का भी सदा शिव, तुष्टि और पुष्टि प्रदान करने वाली (है विजया देवी! आपकी) जय हो...८

भव्य उपासकों को शांति और प्रमोद देने वाली, सत्त्वशालियों को अभय प्रदान करनें में तत्त्पर, सिद्धि देनेवाली, क्षेम प्रदान करने वाली (हे विजया देवी!) आपको नमस्कार हो...९

भक्त जनों को सदा शुभ करने में तत्पर; सम्यग्दृष्टियों को स्थिरता हर्ष, विचार, शक्ति और बुद्धि प्रदान करने वाली; (हे देवी)...१०

जैन धर्म में अनुरक्त और श्री शांतिनाथ भगवान को नमन करने वाली जनता की लक्ष्मी, संपत्ति, कीर्ति और यश की वृद्धि करने वाली हे देवी! जगतमें आपकी जय हो, आपकी विजय हो....११

बाठ, अग्नि, विष, सर्प दंश, दृष्ट ग्रह, राजा, रोग हौर युद्ध के भय से, राक्षस, शत्रु समुह, महामारी, चोर, ईति, हिंसक पशु आदि से (अब तू रक्षण कर, रक्षण कर)...१२

अब तू रक्षण कर, रक्षण कर, उपद्रव रहित कर, उपद्रव रहित कर और शांति कर, शांति कर; ईसी तरह तुष्टि कर; पुष्टि कर, पुष्टि कर और क्षेम कर, क्षेम कर...१३

हे पूज्य गुणवान देवी ! यहां मनुष्यों को निरुपद्रवता, शांति, तुष्टि, पुष्टि और क्षेम करो. ॐ ह्नाँ ह्नीँ ह्नूँ ह्नः यः क्षः ह्नीँ फट् फट् स्वाहा- ऐसे मंत्राक्षरों से (श्री शांतिनाथ भगवान को) वारंवार नमस्कार हो.....१४

इस तरह जिनके (मंत्र रुप) नामाक्षरो द्वारा अच्छी तरह से स्तुत जया देवी नमस्कार करने वालों को शांति करती है, श्री शांतीनाथ भगावन को वारंवार नमस्कार हो.....१५

वह जो इसको (शांति स्तव को) सदा यथा योग्य पठता है, सुनता है या श्रद्धा करता है, और श्री मानदेव सूतरि भी निश्चय ही शांति पद प्राप्त करते है.....१७

जिनेश्वर के पूजन से उपसर्ग नष्ट होते है, विघ्न रुपी अताएं कट जाती है और

मन प्रसन्नता को प्राप्त करता है...१८

सर्व मंगलों में मंगल, सर्व कल्याणों का कारण, सर्व धर्मो में श्रेष्ठ जैन शासन जयवंत है....१९

सूत्र परिचय

मरकी के उपद्रव को दूर करने के लिये नाडोल नगर में श्री मानदेव सूरि द्वारा रचित इस स्तोत्र को पठने, सुनने तथा इस से मन्त्रित जल को छिडकने से सर्व रोग दूर होते हैं और शान्ति फैलती है.

चउक्कसाय सूत्र

चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु,

दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु,

सरस-पियुंग-वन्नु-गय-गामिउ,

जयउ पासु भुवण-त्तय-सामिउ...१

जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ,

सोहइ फणि-मणि-किरणा-लिद्धउ,

नं नव - जल-हर-तडिल्लय-लंछिउ,

सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ...२

गाथार्थ-चउक्कसाय सूत्र

चार कषाय रुपी शत्रुओं का नाश करने वाले, दुर्वेय काम देव के बाणों को तोडने वाले, नवीन प्रियंग लता जैसे (नील) वर्णवाले, हाथी जैसी गति वाले और तीन लोक के नाथ श्री पार्श्वनाथ प्रभु जय का प्राप्त हो...१

जिनके शरीर का तेजो मंडल मनोहर है, शोभित है, नागमणि की किरणों से युक्त है और सच ही बिजली युक्त नवीन मेघ समान है, वे श्री पार्श्वनाथ जिनेश्वर

मनोवांछित प्रदान करें...२

सूत्र परिचय

यह सूत्र श्री पार्श्वनाथ भगवान के गुण कीर्तन एवं स्तुति रुप चैत्य-वंदन है.

मन्नह जिणाणं सज्झाय

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह, धरह सम्मतं,

छव्विह-ावस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइ-दिवसं.....१

पव्वेसु पोसह-वयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ,

सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ.....२

जिण-पूआ जिण-थुणणं, गुरु-थुअ साहम्मिआण वच्छल्लं,

ववहारस्स य सुद्धि, रह जत्ता तित्थ-जत्ता य....३

उवसम-विवेग-संवर, भासा-समिई छजीव-करुणा य,

धम्मिअ-जण-संसग्गो, करण-दमो चरण-परिणामो....४

संघोवरि बहु-माणो, पुत्थय-लिहणं पभावणा तित्थे,

सड्ठाण किच्चेअं, निच्चं सुगुरु-वएसेणं...६

गाथार्थ - मन्नह जिणाणं सज्झाय

जिनेश्वरकी आज्ञा को मानना, मिथ्यात्व को त्याग कर सम्यक्त्व को धारण करन, प्रतिदिन के छः आवश्यको में उधमी होना....१

पर्व दीनों में पौषध व्रत करता, नवकार मंत्र का जाप करना, परोपकार करना और जयणा का पालन करना....२

जिनेश्वर की पूजा करना, जिनेश्वर की स्तुति करना, गुरु की स्तुति करना, साधर्मिक के प्रति वात्सल्य रखना, व्यवहार शुद्धि रखना, रथयात्रा और तीर्थ यात्रा करना...३

उपशांत रहना, विवेक रखना, संवर करना, भाषा समिति का पालन करना, छः काय के जीवों के प्रति करुणा रखना, धार्मिक जनों के संसर्ग में रहना, इंद्रियों का दमन करना और चारित्र ग्रहण की भावना रखना....४

संघ का बहुमान करना, पुस्तक लिखना (और छपाना) और तीर्थ प्रभावना करना-श्रावक के ये कर्तव्य सद्गुरु के उपदेश से जानना....५

सूत्र परिचय

इस सज्झाय द्वारा श्रावक के छत्तीस कर्तव्यो का वर्णन किया गया है.

भरहेसर सज्झाय

भरहेसर बाहुबली, अभय कुमारो अ ठंठण कुमारो,

सिरिओ अण्णिआ उत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ....१

मेअज्ज थूलभद्दो, वयर रिसी नंदिसेण सीहगिरी,

कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरीओ केसी करकंडू....२

हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ,

भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो....३

जंबु पहू वंकचूलो, गय सुकुमालो अवंति सुकुमालो,

धन्नो इलाइ पुत्तो, चिलाइ पुत्तो अ बाहुमुणी....४

अज्ज गिरी अज्ज रक्खिअ, अज्ज सुहत्थी उदायगो मणगो,

कालय सूरी संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ.....५

पभवो विण्हु कुमारो, अद्द कुमारो दठप्पहारी अ,

सिज्जंस कुरगडू अ, सिज्जंभव मेह कुमारो अ...६

एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुण-गणेहिं सुंजत्ता..७

जेसिं नाम-ग्गहणे, मपोरमा मयणरेहा दमयंती,

नमया सुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य.....८

राइमई रिसिदत्ता, पउमाधई अंजणा सिरिदेवी,

जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी...९

बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती सिवा जयंती य,

देवई दोवई धारणी, कलावई पेप्फचूला च...१०

पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य,

जंबुवई सच्चभामा, रुप्पिणी कणहट्ठ महिसीओ...११

जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य,

सेणा वेणा रेणा, भइणीओ थूलभद्दस्स....१२

इच्चाइ महा-सईओ, जयंति अकलंक-सील-कलिआओ.

अज्ज वि वज्जई जासि, जस-पडहो तिहुलणे सयले...१३

गाथार्थ - भरहेर सज्झाय

भरत चक्रवर्ती, बाहुबली, अभय कुमार, ढंढण कुमार, श्रीयक, अर्णिका पुत्र, अतिमुक्त, नागदत्त और....१

मेतार्य मुनि, स्थूलभद्र, वज्र ऋषि, नंदिषेण, सिंदगिरि, कृतपुण्य (कयवन्ना), सुकोशल मुनि, पुंडरीक, केशी, करकंडू और....२

हज्ज, विहल्ल, सुदर्शन शेठ, शाल, महाशाल मुनि, शालिभद्र भद्रबाहु स्वामी, दशार्णभद्र, प्रसन्नचंद्र राजर्षि, यशोभद्र सूरि और....३

जम्बु स्वामी, वंकचूल राजकुमार, गज सुकुमाल, अवन्ति सुकुमाल, धन्न, इलाची पुत्र, चिलाती पुत्र, बाहु मुनि और....४

आर्य महागिरि, आर्य रक्षित, आर्य सुहस्ति सूरि, उदयन राजर्षि, मनक कुमार, कालक सूरि, शाम्ब कुमार, प्रद्युम्न कुमार, राजा मलदेव और...५

प्रभव स्वामी, विष्णु कुमार, आर्द्र कुमार, दृठ प्रहारी, श्रेयांस, कूरगडु मुनि, शच्चयंभव स्वामी और मेघ कुमार.....६

गुणों के समुह से युक्त इत्यादि महापुरुष सुख को प्रदान करें; जिनका नाम लेने से पाप के बंधन नष्ट होते है....७

सुलसा, चंदनबाला, मनोरमा, मदनरेखा, दमयंती, नर्मदा सुंदरी, सीता, नंदा, भद्रा, सुभद्रा और...८

राजीमती, ऋषिदत्ता, पद्मावती, अंजना सुंदरी, श्री देवी, ज्येष्ठा, सुज्येष्ठा, मृगावती, प्रभावती, चेल्लणा देवी और...१०

पद्मावती, गौरी, गांधारी, लक्ष्मणा, सुसीमा, जंबुवती, सत्यभामा और आठ श्री कृष्ण की पटराणियाँ और...११

यक्षा, यक्षदत्ता, भूता, भूतदत्ता, सेना, वेना और रेणा-स्थूलभद्र की (ये सात) बहने.....१२

निष्कलंक शीयल को धारण करनेवाली इत्यादी महा सतियाँ जय पाती है, जिनके यश का पटह समस्त तीनों भुवन में आजभी बज रहा है....१३

सूत्र परिचय

इस सज्झाय द्वारा प्रातः स्मरणीय ब्रह्मचारी, दानेश्वरी, तपस्वी आदि उत्तम पुरुषों तथा स्त्रियों का स्मरण किया जाता है.

सकल तीर्थ वंदना

सकल तीर्थ वंदुं कर जोड, जिनवर नामे मंगल क्रोड,

पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निश-दिश...१

बीजे लाख अट्ठावीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां,

चोथे स्वर्गे अड लाख धार, पांचमें वंदु लाख ज चार...२

छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीस सहस प्रासाद,

आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमे वंदुं शत चार...३

अगियार बारमें त्रणसें सार, नव ग्रैवैयके त्रणसें अठार,

पांच अनुत्तर सर्वे मळी, लाख चोराशी अधिकां वळी....४

सहस सत्ताणुं त्रेवीस सार, जिनवर भवन तणो अधिकार,

लांबां सो जोजन विस्तार, पचास ऊंचां बहोंतेर धार...५

एक सो एंशी बिंब प्रमाणं, सभा सहित एक चैत्ये जाण,

सो क्रोड बावन क्रोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौआल...६

सातमें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल,

सात क्रोडने बहोंतेर लाख, भवनपतिमा देवळ भाख.....७

एक सो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण,

तेरसें क्रोड नेव्यासी क्रोड, साठ लाख वंदुं कर जोड...८

बत्रीससें ने ओगणसाठ, तीर्छा लोकमां चैत्यनो पाठ,

त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणसें वीश ते बिंब जुहार...९

व्यंतर ज्योतिषीमां वळी जेह, शाश्वता जिन वंदुं तेह,

ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमान नामु गुण-सेण...१०

सम्मेत-शिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदुं चोवीश,

विमलाचल ने गठ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार...११

शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार,

अंतरिक्ख वरकाणो पास, जीराउलो ने थंभण पास...१२

गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह,

विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश-दिश...१३

अढी द्वीपमां जे अपगार, अठार सहस शीलांगना धार,

पंच महा-व्रत समिति सार, पाळे पळावे पंचाचार....१४

बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदुं गुण-मणि-माल,

नित नित ऊठी कीर्ति करुं, जीव कहे भव सायर तरुं...१५

गाथार्थ - सकल तीर्थ वंदना

सकल तीर्थ कर हाथ जोडकर मैं वंदन करता हूँ, जिनेश्वर के नाम से क्रोडों मंगल होते है, पहिले स्वर्ग में (स्थित) बत्तीस लाख जिनेश्वर के चैत्यों को रात दिन मैं नमस्कार करता हूँ...१

दूसरे (स्वर्ग) में अट्ठावीस लाख (चैत्य) कहे है, तीसरे (स्वर्ग) में बारह लाख (चैत्य) को माने है, चौथे स्वर्ग में (स्थित) आठ लाख (चैत्यों) को धारण कर, पांचवें

(स्वर्ग) में (स्थित) चार लाख (चैत्यो) को मैं अवश्य वंदन करता हूँ...२

छट्ठे स्वर्ग में (स्थित) पचास हजार (चैत्यो)को, सातवें (स्वर्ग) में (स्थित) चालीस हजार चैत्यों को, आठवें स्वर्ग में (स्थित) छ हजार (चैत्यों) को, एवं नौवें और दसवें (स्वर्ग) में (स्थित) चार सौ (चैत्यों) को मैं वंदन करता हूँ....३

ग्यारहवें और बारहवें (स्वर्ग) में स्थित तीन सौ (चैत्य) सार रुप है. नव ग्रैवेयक (विमानोेें) में (स्थित) में स्थित तीन सौ अट्ठारह (चैत्य) और (पांच) अनुत्तर (विमानों) में (स्थित) पांच (चैत्य) - सब मिलाकर चौरासी लाख और अधिक....४

सत्तानवे हजार तेवीस (चैत्य) सार रुप है, जिनेश्वर के भवनों का (यह शास्त्रोक्च) अधिकार है, प्रत्येक चैत्य ए सौ योजन लंबे, पचास (योजन) चौडे और बहोंतर (योजन) ऊँचे (चैत्यो को) धारण कर...५

एक सौ अस्सी प्रतिमाओं का प्रमाण सभा सहित प्रत्येक चैत्य में जानना, ए सौ क्रोड बावन क्रोड (एक सौ बावन क्रोड) चोरानवे लाख चौंवालीस हजार.. को याद कर...६

सात सौ के उपर साठ (सात सो साठ) विशाल (प्रतिमाओं)(को याद कर). सर्व प्रतिमाओं को तीनों काल मैं वंदन करता हूँ. सात क्रोड और बहोत्तर लाख मंदिर भवनपति के (आवासों) में (शास्त्र के आधार से) बोल....७

एक सौ अस्सी प्रतिमाओं के प्रमाण से प्रत्येक चैत्य में संख्या जानना, तेरह सौ क्रोड नव्यासी क्रोड (तेरह सौ नव्यासी क्रोडा साठ लाख (प्रतिमाओं) को अंजली जोडकर मैं वंदन करता हूँ....८

तीच्छ्री लोक में बत्तीस सौ (तीन हजार दो सौ) और उनसाठ चैत्यों का (शास्त्र) पाठ है. तीन लाख इकानवे हजार तीन सौ बीस-उन प्रतीमाओं को वंदन कर....९

व्यंतरऔर न्योतिष्क लोक में गुणों की श्रेणी रुप श्री ऋषभदेव, री चंद्रानन, श्री वारिषेण और श्री वर्धमान नामक जो शाश्वत जिनेश्वरों की प्रतिम्एँ) है, उन्हे मैं

वंदन करता हूँ...१०

सम्मेत शिखर पर्वत पर (स्थित) बीस जीनेश्वरों (की प्रतिमाओं) को मैं वंदन करता हूँ. अष्टापद पर्वत पर (स्थित) चौबीस जिनेश्वरों (की प्रतिमाओं) को मैं वंदन करता हूँ. विमलाचल, गिरनार गढ और आबु पर्वत के उपर (स्थित) जिनेश्वरों की प्रतिमाओं को तुं वंदन कर....११

सार रुप श्री शंखेश्वर और श्री केशरियाजी (तीर्थों) में (स्थित) जिनेश्वरों (की प्रतिमाओं)को, तारंगा पहाड पर (स्थित) श्री अजितनाथ (जिनेश्व की प्रतिमाओं) को, श्री अंतरिक्ष और वरकाणा (तीर्थो) में (स्थित) श्री पार्श्वनाथ (जिनेश्वरो की प्रतिमाओं) को श्री जीरावाला और श्री स्थंभन (खंभात तीर्थों) में (स्थित) श्री पार्श्वनाथ (जिनेश्वर की प्रतिमाओं) को तुं जुहार....१२

ग्राम, नगर, पुर और पत्तन में गुणों के गृह रुप जिनेश्वरों के जो चैत्य (है, उन्हें) मैं नमस्कार करता हूँ बीस विहरमान जिनेश्वरों को मैं वंदन करता हूँ मैं रातदिन अनंत सिद्ध भगवंतो को वंदन करता हूँ १३

ढाई द्वीप में जो साधु अठारह हजार शीयल के अंगो को धारण करते हैं सार रुप पाँच महाव्रत और (पाँच) समिति और पां आचार को पालते हैं और पलाते है...१४

बाह्य और अभ्यंतर तप से उज्जवल हैं, गुण रुपी रत्नों की माला जैसे उन मुनियों को मैं वंदन.

सूत्र परिचय

जीव विजयजी द्वारा रचित इस स्तोत्र से तीनों लोक के शाश्वत एवं अशाश्वत चैत्यों में स्थित जिन प्रतिमाओं की संख्या बताकर सभी मुख्य तीर्थ, विहरमान तीर्थंकर, सिद्ध भगवंतो एवं सर्व साधुओं को नमस्कार किया गया है.

२४ तीर्थंकरो के नाम

क्र. सं.

	नाम	लांछन	वर्ण
१.	श्री ऋषभदेव	वृषभ (बैल)	सुवर्ण
२.	श्री अजितनाथ	हस्ती (हाथी)	सुवर्ण
३.	श्री संभवनाथ	अश्व (घोडो)	सुवर्ण
४.	श्री अभिनंदन स्वामी	वानर (वांदरो)	सुवर्ण
५.	श्री सुमतिनाथ	क्रौचपक्षी	सुवर्ण
६.	श्री पद्मप्रभ स्वामी	पद्म (कमल)	लाल
७.	श्री सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	सुवर्ण
८.	श्री चन्द्रप्रभ स्वामी	चन्द्र	श्वेत
९.	श्री सुविधिनाथ	मगरमच्छ	उज्जवल
१०.	श्री शीतलनाथ	श्रीवत्स	सुवर्ण
११.	श्री श्रेयांसनाथ	गैंडा	सुवर्ण
१२.	श्री वासुपूज्य स्वामी	पाडा	लाल
१३.	श्री विमलनाथ	वराह	सुवर्ण
१४.	श्री अनन्तनाथ	बाज	सुवर्ण
१५.	श्री धर्मनाथ	वज्र	सुवर्ण
१६.	श्री शांतिनाथ	मृग (हिरण)	सुवर्ण
१७.	श्री कुंथुनाथ	छाग (बकरा)	सुवर्ण
१८.	श्री अरनाथ	नंदावर्त	सुवर्ण
१९.	श्री मल्लिनाथ	कुम्भ	नीला
२०.	श्री मुनिसुव्रत स्वामी	कछुआ	श्याम
२१.	श्री नमिनाथ	नीला कमल	सुवर्ण
२२.	श्री नेमिनाथ	शंख	श्याम
२३.	श्री पार्श्वनाथ	सर्प	नीला
२४.	महावीर स्वामी	सिंह	सुवर्ण

२० विहरमान जिनेश्वर के नाम

क्र. सं.	नाम	नाम
१.	सीमंधर स्वामी	२. युगमंधर स्वामी

३.	बाहु स्वाम	४.	सुबाहु स्वामी
५.	सुजात स्वामी	६.	स्वयंप्रभ स्वामी
७.	ऋषभानन स्वामी	८.	अनन्तवीर्य स्वामी
९.	सुरप्रभ स्वामी	१०.	विशाल स्वामी
११.	वज्रधर स्वामी	१२.	चंद्रानन स्वामी
१३.	चन्द्रबाहु स्वामी	१४.	भुजङ्ग स्वामी
१५.	ईश्वर स्वामी	१६.	नेमिप्रभ स्वामी
१७.	वीरसेन स्वामी	१८.	महाभद्र स्वामी
१९.	देवयशा स्वामी	२०.	अजितवीर्य स्वामी

नवपद के नाम तथा वर्ण

क्र. सं.	**नाम**	**वर्ण**
१.	अरिहंत	श्वेत (सफेद)
२.	सिद्ध	रक्त (लाल)
३.	आचार्य	पीला
४.	उपाध्याय	हरा
६.	दर्श्न	सफेद
७.	ज्ञान	सफेद
८.	चारित्र	सफेद
९.	तप	सफेद